



Luv Bansal

01 Nov 1990

01:11 AM

Delhi University

Model: Web-MyKundli

Order No: 119115101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 31-01/11/1990
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 01:11:00 घंटे
इष्ट _____: 46:36:28 घटी
स्थान _____: Delhi University
राज्य _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:49:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:23 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:29:14 घंटे
सूर्योदय _____: 06:32:24 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:36:58 घंटे
दिनमान _____: 11:04:33 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 14:23:38 तुला
लग्न के अंश _____: 03:20:08 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: हर्षण
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: ज--
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	कार्तिक	10
पंजाबी	संवत : 2047	कार्तिक	16
बंगाली	सन् : 1397	कार्तिक	15
तमिल	संवत : 2047	आइपसी	16
केरल	कोल्लम : 1166	तुलम	15
नेपाली	संवत : 2047	कार्तिक	16
चैत्रादि	संवत : 2047	कार्तिक	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2047	कार्तिक	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
 तिथि समाप्ति काल _____ : 12:26:15
 जन्म तिथि _____ : 13
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:09:02 घंटे
 जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : व्याघात
 योग समाप्ति काल _____ : 14:58:06 घंटे
 जन्म योग _____ : हर्षण
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 12:26:15 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 51:05:11
 भोग्य _____ : 56:00:16
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 1 वर्ष 8 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : चतुष्पाद
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : मृग
 लग्न _____ : सिंह
 सूर्य _____ : मिथुन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : कर्क
 बुध _____ : कुम्भ
 गुरु _____ : सिंह
 शुक्र _____ : कन्या
 शनि _____ : वृष
 राहु _____ : तुला

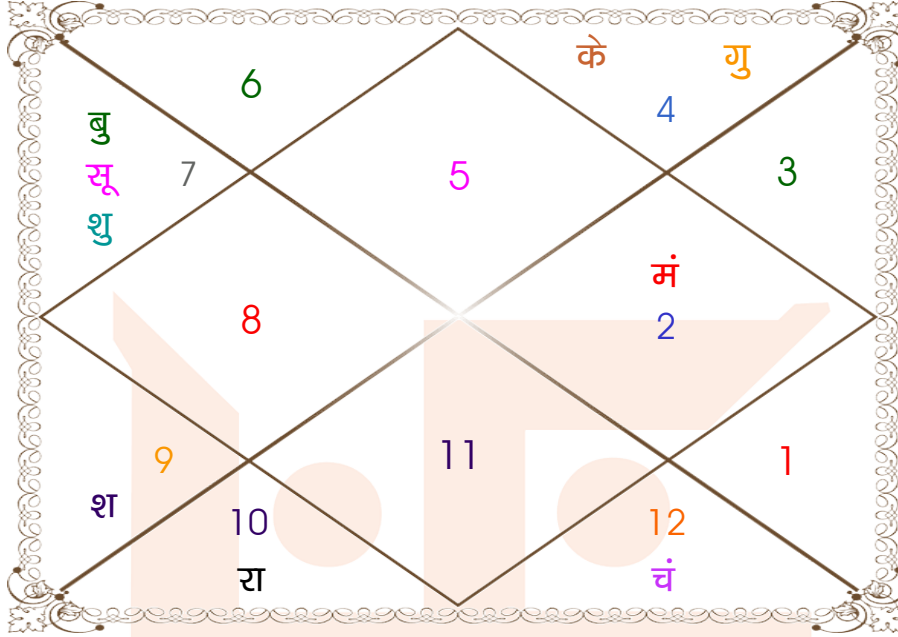


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

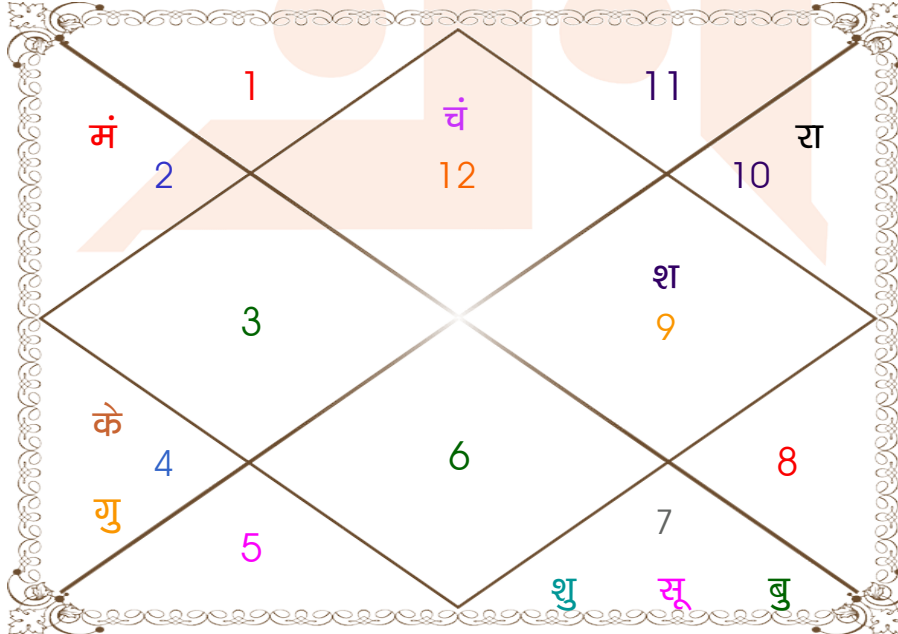


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

चं		मं	
			के गु
रा			ल
श		शु सू बु	

लग्न कुण्डली

मं		चं
के गु		रा
ल	बु सू शु	श

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 8मा 9दि
शनि

01/11/1990

11/07/2093

शनि	10/07/1992
बुध	11/07/2009
केतु	10/07/2016
शुक्र	10/07/2036
सूर्य	11/07/2042
चन्द्र	10/07/2052
मंगल	11/07/2059
राहु	11/07/2077
गुरु	11/07/2093

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 5मा 10दि
भद्रिका

12/04/2022

12/04/2027

भद्रिका	22/12/2022
उल्का	22/10/2023
सिद्धा	11/10/2024
संकटा	21/11/2025
मंगला	11/01/2026
पिंगला	22/04/2026
धान्या	21/09/2026
भ्रामरी	12/04/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



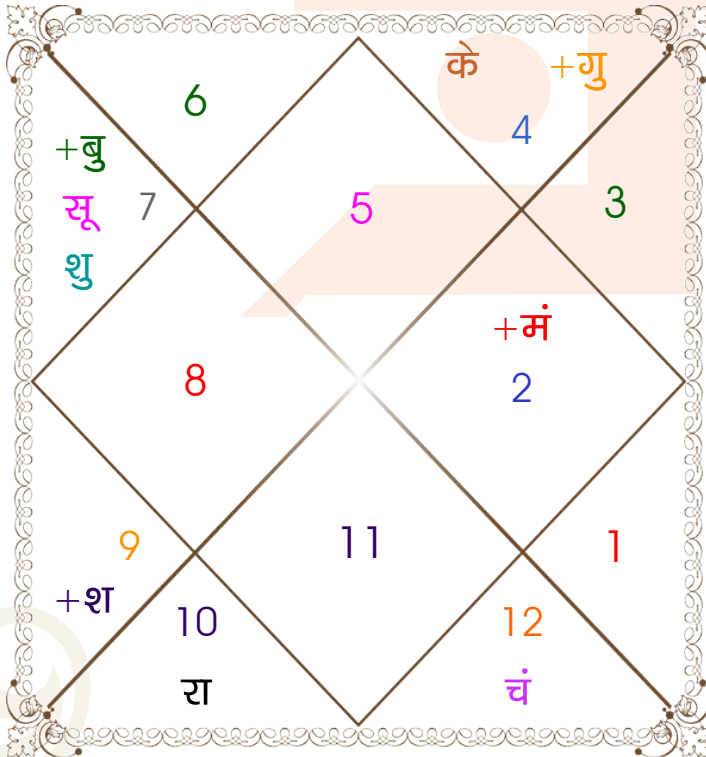
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	03:20:08	311:08:45	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	---
सूर्य			तुला	14:23:38	00:59:59	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	नीच राशि
चंद्र			मीन	15:28:47	14:27:48	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	सम राशि
मंगल	व		वृष	19:56:11	00:09:43	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	सम राशि
बुध		अ	तुला	20:28:04	01:35:10	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	मित्र राशि
गुरु			कर्क	18:29:41	00:05:25	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	उच्च राशि
शुक्र		अ	तुला	14:11:13	01:15:14	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	मूलत्रिकोण
शनि			धनु	26:10:46	00:03:39	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	सम राशि
राहु	व		मक	08:30:09	00:09:49	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	08:30:09	00:09:49	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			धनु	12:47:23	00:02:16	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
नेप			धनु	18:27:39	00:01:13	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	23:35:22	00:02:24	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
दशम भाव			वृष	00:56:24	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	राहु	--

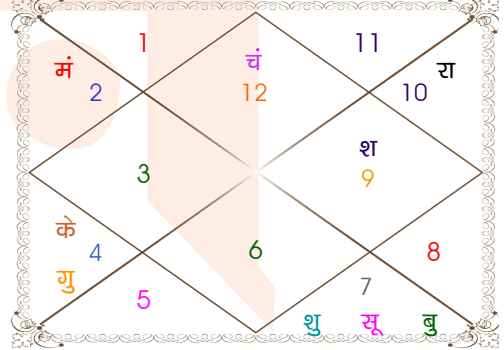
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:57

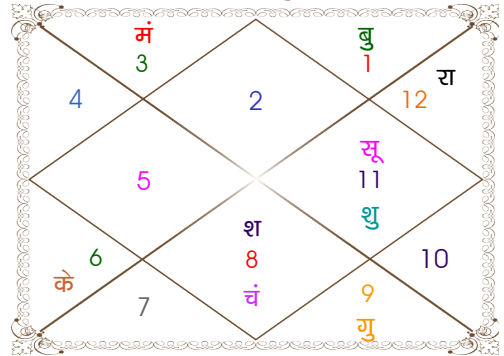
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 17:56:11	सिंह 03:20:08
2	सिंह 17:56:11	कन्या 02:32:13
3	कन्या 17:08:16	तुला 01:44:19
4	तुला 16:20:21	वृश्चिक 00:56:24
5	वृश्चिक 16:20:21	धनु 01:44:19
6	धनु 17:08:16	मकर 02:32:13
7	मकर 17:56:11	कुम्भ 03:20:08
8	कुम्भ 17:56:11	मीन 02:32:13
9	मीन 17:08:16	मेष 01:44:19
10	मेष 16:20:21	वृष 00:56:24
11	वृष 16:20:21	मिथुन 01:44:19
12	मिथुन 17:08:16	कर्क 02:32:13

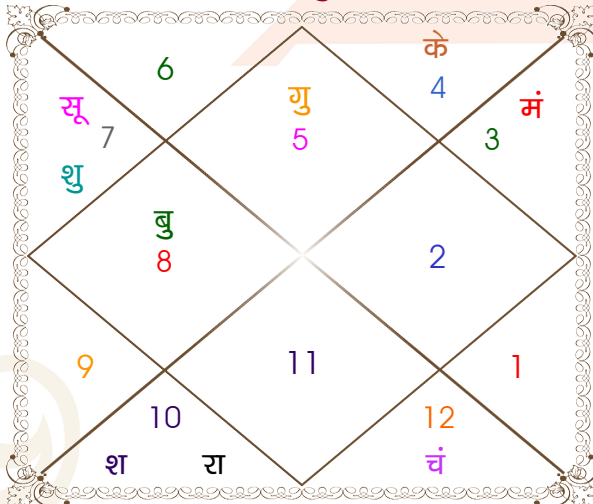
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	03:20:08
2	सिंह	29:02:16
3	कन्या	28:39:39
4	वृश्चिक	00:56:24
5	धनु	03:24:27
6	मकर	04:22:27
7	कुम्भ	03:20:08
8	कुम्भ	29:02:16
9	मीन	28:39:39
10	वृष	00:56:24
11	मिथुन	03:24:27
12	कर्क	04:22:27

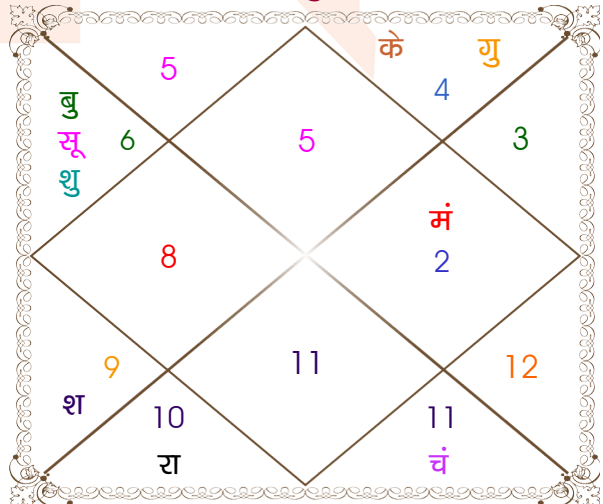
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 8 मास 9 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
01/11/1990	10/07/1992	11/07/2009	10/07/2016	10/07/2036
10/07/1992	11/07/2009	10/07/2016	10/07/2036	11/07/2042
00/00/0000	बुध 07/12/1994	केतु 07/12/2009	शुक्र 10/11/2019	सूर्य 28/10/2036
00/00/0000	केतु 04/12/1995	शुक्र 06/02/2011	सूर्य 09/11/2020	चंद्र 29/04/2037
00/00/0000	शुक्र 04/10/1998	सूर्य 14/06/2011	चंद्र 11/07/2022	मंगल 03/09/2037
00/00/0000	सूर्य 11/08/1999	चंद्र 13/01/2012	मंगल 10/09/2023	राहु 29/07/2038
00/00/0000	चंद्र 09/01/2001	मंगल 10/06/2012	राहु 10/09/2026	गुरु 17/05/2039
00/00/0000	मंगल 06/01/2002	राहु 28/06/2013	गुरु 11/05/2029	शनि 28/04/2040
00/00/0000	राहु 26/07/2004	गुरु 04/06/2014	शनि 10/07/2032	बुध 05/03/2041
01/11/1990	गुरु 31/10/2006	शनि 14/07/2015	बुध 11/05/2035	केतु 11/07/2041
गुरु 10/07/1992	शनि 11/07/2009	बुध 10/07/2016	केतु 10/07/2036	शुक्र 11/07/2042
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
11/07/2042	10/07/2052	11/07/2059	11/07/2077	11/07/2093
10/07/2052	11/07/2059	11/07/2077	11/07/2093	02/11/2110
चंद्र 11/05/2043	मंगल 06/12/2052	राहु 23/03/2062	गुरु 29/08/2079	शनि 13/07/2096
मंगल 10/12/2043	राहु 25/12/2053	गुरु 16/08/2064	शनि 11/03/2082	बुध 24/03/2099
राहु 10/06/2045	गुरु 01/12/2054	शनि 23/06/2067	बुध 16/06/2084	केतु 02/05/2100
गुरु 10/10/2046	शनि 10/01/2056	बुध 09/01/2070	केतु 23/05/2085	शुक्र 03/07/2103
शनि 10/05/2048	बुध 06/01/2057	केतु 28/01/2071	शुक्र 22/01/2088	सूर्य 14/06/2104
बुध 10/10/2049	केतु 04/06/2057	शुक्र 27/01/2074	सूर्य 09/11/2088	चंद्र 13/01/2106
केतु 11/05/2050	शुक्र 04/08/2058	सूर्य 22/12/2074	चंद्र 11/03/2090	मंगल 22/02/2107
शुक्र 10/01/2052	सूर्य 10/12/2058	चंद्र 22/06/2076	मंगल 15/02/2091	राहु 29/12/2109
सूर्य 10/07/2052	चंद्र 11/07/2059	मंगल 11/07/2077	राहु 11/07/2093	गुरु 02/11/2110

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 8 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु 10/09/2023 10/09/2026	शुक्र - गुरु 10/09/2026 11/05/2029	शुक्र - शनि 11/05/2029 10/07/2032	शुक्र - बुध 10/07/2032 11/05/2035	शुक्र - केतु 11/05/2035 10/07/2036
राहु 21/02/2024 गुरु 16/07/2024 शनि 06/01/2025 बुध 10/06/2025 केतु 13/08/2025 शुक्र 12/02/2026 सूर्य 07/04/2026 चंद्र 08/07/2026 मंगल 10/09/2026	गुरु 18/01/2027 शनि 21/06/2027 बुध 06/11/2027 केतु 02/01/2028 शुक्र 12/06/2028 सूर्य 31/07/2028 चंद्र 20/10/2028 मंगल 16/12/2028 राहु 11/05/2029	शनि 10/11/2029 बुध 23/04/2030 केतु 29/06/2030 शुक्र 08/01/2031 सूर्य 07/03/2031 चंद्र 11/06/2031 मंगल 18/08/2031 राहु 07/02/2032 गुरु 10/07/2032	बुध 04/12/2032 केतु 02/02/2033 शुक्र 25/07/2033 सूर्य 15/09/2033 चंद्र 10/12/2033 मंगल 08/02/2034 राहु 13/07/2034 गुरु 28/11/2034 शनि 11/05/2035	केतु 05/06/2035 शुक्र 15/08/2035 सूर्य 05/09/2035 चंद्र 11/10/2035 मंगल 05/11/2035 राहु 08/01/2036 गुरु 04/03/2036 शनि 11/05/2036 बुध 10/07/2036
सूर्य - सूर्य 10/07/2036 28/10/2036	सूर्य - चंद्र 28/10/2036 29/04/2037	सूर्य - मंगल 29/04/2037 03/09/2037	सूर्य - राहु 03/09/2037 29/07/2038	सूर्य - गुरु 29/07/2038 17/05/2039
सूर्य 16/07/2036 चंद्र 25/07/2036 मंगल 31/07/2036 राहु 17/08/2036 गुरु 31/08/2036 शनि 18/09/2036 बुध 03/10/2036 केतु 10/10/2036 शुक्र 28/10/2036	चंद्र 12/11/2036 मंगल 23/11/2036 राहु 20/12/2036 गुरु 14/01/2037 शनि 11/02/2037 बुध 09/03/2037 केतु 20/03/2037 शुक्र 19/04/2037 सूर्य 29/04/2037	मंगल 06/05/2037 राहु 25/05/2037 गुरु 11/06/2037 शनि 01/07/2037 बुध 20/07/2037 केतु 27/07/2037 शुक्र 17/08/2037 सूर्य 24/08/2037 चंद्र 03/09/2037	राहु 23/10/2037 गुरु 06/12/2037 शनि 27/01/2038 बुध 14/03/2038 केतु 02/04/2038 शुक्र 27/05/2038 सूर्य 13/06/2038 चंद्र 10/07/2038 मंगल 29/07/2038	गुरु 06/09/2038 शनि 22/10/2038 बुध 03/12/2038 केतु 20/12/2038 शुक्र 06/02/2039 सूर्य 21/02/2039 चंद्र 17/03/2039 मंगल 03/04/2039 राहु 17/05/2039
सूर्य - शनि 17/05/2039 28/04/2040	सूर्य - बुध 28/04/2040 05/03/2041	सूर्य - केतु 05/03/2041 11/07/2041	सूर्य - शुक्र 11/07/2041 11/07/2042	चंद्र - चंद्र 11/07/2042 11/05/2043
शनि 11/07/2039 बुध 29/08/2039 केतु 19/09/2039 शुक्र 15/11/2039 सूर्य 03/12/2039 चंद्र 01/01/2040 मंगल 21/01/2040 राहु 13/03/2040 गुरु 28/04/2040	बुध 11/06/2040 केतु 29/06/2040 शुक्र 20/08/2040 सूर्य 05/09/2040 चंद्र 01/10/2040 मंगल 19/10/2040 राहु 04/12/2040 गुरु 15/01/2041 शनि 05/03/2041	केतु 12/03/2041 शुक्र 03/04/2041 सूर्य 09/04/2041 चंद्र 20/04/2041 मंगल 27/04/2041 राहु 16/05/2041 गुरु 02/06/2041 शनि 22/06/2041 बुध 11/07/2041	शुक्र 09/09/2041 सूर्य 28/09/2041 चंद्र 28/10/2041 मंगल 18/11/2041 राहु 12/01/2042 गुरु 02/03/2042 शनि 29/04/2042 बुध 20/06/2042 केतु 11/07/2042	चंद्र 05/08/2042 मंगल 23/08/2042 राहु 08/10/2042 गुरु 17/11/2042 शनि 04/01/2043 बुध 17/02/2043 केतु 06/03/2043 शुक्र 26/04/2043 सूर्य 11/05/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

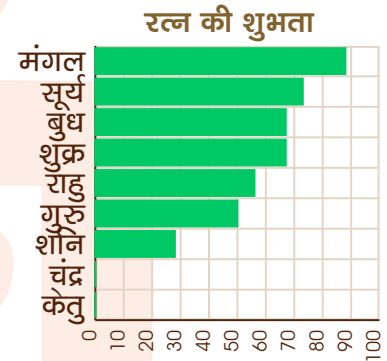


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	88%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	73%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	67%	पराक्रम, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	67%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	50%	कम खर्च, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	28%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	10/07/1992	61%	0%	75%	73%	50%	74%	52%	62%	0%
बुध	11/07/2009	80%	0%	88%	80%	50%	74%	28%	56%	0%
केतु	10/07/2016	61%	0%	94%	67%	50%	74%	3%	38%	9%
शुक्र	10/07/2036	61%	0%	88%	73%	50%	80%	41%	62%	0%
सूर्य	11/07/2042	86%	0%	94%	67%	56%	55%	3%	38%	0%
चंद्र	10/07/2052	80%	0%	88%	73%	50%	67%	28%	38%	0%
मंगल	11/07/2059	80%	0%	100%	55%	56%	67%	28%	38%	0%
राहु	11/07/2077	61%	0%	75%	67%	50%	74%	41%	69%	0%
गुरु	11/07/2093	80%	0%	94%	55%	62%	55%	28%	56%	0%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दम्पति
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
धनार्जन
पराक्रम



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझे जाएंगे। आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पितृ या गर्भी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढ़ाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विवास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहयोग प्रदान करगें।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(10/07/2016 - 10/07/2036)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 10/07/2016 को आरम्भ होकर 10/07/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी

हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(10/09/2023 - 10/09/2026)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 10/07/2016 को प्रारंभ होकर 10/07/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 10/09/2023 को प्रारंभ होकर 10/09/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप किसी कांड में फंस सकते हैं। शत्रु कष्ट पहुंचाएंगे। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। प्रजनन तंत्र के किसी अंग में भूत-प्रेत से संबंधित व्याधि हो सकती है। धनागम उत्तम होगा।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(10/09/2026 - 11/05/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/07/2016 को आरंभ हुई थी और 10/07/2036 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/09/2026 को प्रारंभ होकर 11/05/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी पापकर्म में रुचि हो सकती है; धर्म से नफरत करेंगे या उसका उपहास कर सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि होगी, मगर बाद में पछताएंगे। भौतिक सुखों जैसे उत्तम वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि में ध्यान रहेगा। वासना की पूर्ति के लिए घर से दूर भी रह सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(11/05/2029 - 10/07/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/07/2016 को प्रारंभ हुई थी और वद 10/07/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 11/05/2029 को प्रारंभ होकर 10/07/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

शनि शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 7, 11, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में समाज में आपकी लोकप्रियता में कमी आ सकती है। आपका स्वभाव झगड़ालू हो सकता है। घरेलू जीवन कष्टप्रद हो सकता है, जीवन में बहुत सारे बदलाव आएंगे, जीवन सुचारु नहीं रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट के कारण कष्ट बढ़ेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

- शिवजी की उपासना प्रतिदिन करें।
- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

